आपन लेखा

'बुन्सन बर्नर के बीच छह इंच जगह' पढ़कर कुछ विशेष अनुभूति हुई। एक बात जो साफतौर पर सामने आई कि लेखक को शिक्षकों से कुछ तो जानकारी मिली, चाहे वह सही थी या गलत – यह और बात है।

हमारे आसपास के स्कूलों में तो कुछ शिक्षक छात्रों को सामान्य-सी जानकारी भी नहीं देते। जैसे कि कई छात्रों का कहना है कि पौधे दिन में केवल प्रकाश संश्लेषण की क्रिया ही करते हैं और रात में केवल श्वसन करते हैं। यदि कोई छात्र शिक्षक से पूछता है कि अगर श्वसन क्रिया न हो पाए तो मृत्यु हो जाती है फिर पौधे प्रकाश संश्लेषण क्रिया के दौरान इतने लंबे समय तक श्वसन न कर पाने के बाद भी क्यों नहीं मरते? क्या यह संभव नहीं कि प्रकाश संश्लेषण और श्वसन की क्रिया साथ-साथ चलती रहे? प्रत्युत्तर में उन्हें केवल झिड़कियां ही मिलती हैं। हाई स्कूल के छात्रों की जुबानी यह बातें सुनकर दुःख होता है।

कविता शर्मा
सरस्वती विद्या मंदिर
उच्च. माध्य. विद्यालय, हरदा, म. प्र.

मैं सातवीं का छात्र हूं। एक मित्र ने संदर्भ पत्रिका के बारे में बताया। मैंने पत्रिका पढ़ी लेकिन 'संदर्भ' शब्द का अर्थ नहीं समझ पाया। वैसे पत्रिका हमारे लिए नहीं है क्योंकि इसमें विज्ञान की उच्च स्तरीय सामग्री होती है।

कैलाश हरियाले
हिरनखेड़ा
जिला होशंगाबाद, म. प्र.

दसवां अंक पढ़ा। 'हाऊ चिल्ड्रन लर्न' के हिन्दी रूपांतरित अंश के लिए सुशील जोशी को धन्यवाद। ज़रा सिर खुजलाइए में 'क्यों नहीं कटी बर्फ' काफी रोमांचक सवाल था। विजय शंकर वर्मा का लेख 'गणक से गणित की समझ' वास्तव में गणित जैसे उबाऊ समझे जाने वाले विषय पर विस्तृत चर्चा व खुला पक्ष रखे जाने की दिशा में प्रयासरत कदम था। उन्हें साधुवाद।

कुछ उर्दू या अन्य भाषाई शब्दों के तुरंत बाद कोष्ठक में उसका अर्थ लिख दिया जाए तो लेखों को समझने में दिक्कत नहीं होगी। यदि पत्रिका की कुछेक सामग्री का चयन शिक्षक स्तर से हटकर बाल स्तर से किया तो पत्रिका बच्चों के लिए भी ज्ञान-विज्ञान का आदर्श बन जाएगी।

मेरा एक और सुझाव है कि हर अंक में एक स्थाई स्तम्भ रखा जाए जिसमें किसी वैज्ञानिक की जीवनी दी जाए, ताकि जुझारू वैज्ञानिक के बारे में पढ़कर सभी समझ सकें कि वैज्ञानिक जीवन कैसा होता है।

चम्पालाल कुशवाहा 'विजय'
हिरनखेड़ा, जिला होशंगाबाद

संदर्भ विज्ञान शिक्षण की एक मात्र सम्पूर्ण पत्रिका है। इसमें विज्ञान की बातें एकदम सटीक होती हैं। मैं यह पत्र 'गूलर के फूल क्यों नहीं दिखते?' के संबंध में डी. एन. मिश्रराज के लेख पर भेज रहा हूं।

मुझे लगता है कि श्री मिश्रराज के पत्र की जो भाषा है वह दसवीं के छात्रों के लिए अनसुलझी है। कृपया इसका सरल

भाषा में रूपांतरण कर पुनः समझाने की कृपा करें, क्योंकि यह लेख छात्रों के लिए काफी फायदेमंद है। मेरी एक और फरमाइश है कि संदर्भ के प्रकाशन और सम्पादन में सहयोग देने वालों का पूर्ण परिचय दीजिए।

बलदेव जुमनानी, कक्षा दसवीं
साधु वासवाणी विद्या मंदिर
होशंगाबाद, म. प्र.

संदर्भ पढ़ने को मिली,पढ़कर प्रसन्नता हुई कि होशंगाबाद से एक उच्चस्तरीय पत्रिका निकल रही है। नवंबर 95-फरवरी 96 के अंक में – 'यूं बनी एक कहानी', 'संकेत सूत्र और संगठन', 'किसमें प्रोटीन, कहां वसा' आदि लेख अच्छे लगे।

रामकृष्ण जामेरिया, गली न. 6, हरदा

कुछ इंतज़ार तो अवश्य कराती है संदर्भ, किन्तु कहावत है न कि 'इंतज़ार का फल मीठा होता है.....।' वे बारीकियां जिन्हें हम शैक्षिक जीवन में नहीं जान पाए, इसमें मिलती हैं ..... उम्मीद है कि मिलती भी रहेंगी। प्रत्येक अंक में किसी वैज्ञानिक की जीवनी भी दी जाए तो अच्छा रहेगा।

संजय ओसवाल
ओसवाल मेडिकल, विजयनगर
अजमेर, राजस्थान

संदर्भ

संदर्भ सजिल्द: संदर्भ के पहले छह अंकों का सजिल्द संस्करण। इन अंकों में प्रकाशित सामग्री का विषयवार इंडेक्स संस्करण के साथ है। इस संस्करण का मूल्य 60 रुपए (डाकखर्च सहित) है।

सजिल्द

राशि कृपया डिमांड ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें। ड्राफ्ट एकलव्य के नाम से बनवाएं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

एकलव्य
कोठी बाज़ार
होशंगाबाद - 461 001

एकलव्य
ई-1/25, अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462 016